AMOGHVARTA

ISSN : 2583-3189

कॉर्लिस लामोन्ट का मानववाद

ORIGINAL ARTICLE

Authors

प्रियदर्शी सौरभ
शोधार्थी
सहायक प्रोफेसर, दर्शन विभाग
जगदम कॉलेज
छपरा, बिहार, भारत

डॉ. मनोज कुमार
शोध पर्यवेक्षक
सहायक प्राध्यापक, दर्शन विभाग
पी.एन. कॉलेज
परसा, सारण, बिहार, भारत

शोध सार

मानववाद का दर्शन ब्रह्मांड, मानव तथा उसकी समस्याओं के विवेचन को सर्वाधिक महत्व देता है। लामोन्ट का मानववाद एक बहुआयामी दर्शन है। मानववाद का अर्थ इस प्राकृतिक विश्व में मानवता के सर्वोच्च शुभ तथा बुद्धि, विज्ञान और लोकतंत्र के प्रवल समर्थन से है। मानववाद यह मानता है कि मानव अपनी समस्याओं के समाधान में स्वयं सक्षम है। यह सक्षमता विवेक तथा वैज्ञानिक सोच को साहस तथा दूरदृष्टि के साथ सामंजस्य स्थापित करने से आती है। मानववाद की नैतिकता समस्त मानवीय मूल्यों का स्त्रोत लौकिक मानता है। नैतिकता का उद्देश्य राष्ट्र, धर्म व नस्ल के आधार पर भेदभाव किए बगैर मानवीय सुख, स्वतंत्रता तथा प्रगति की प्राप्ति करना है। लामोन्ट का मानववाद विवेक तथा वैज्ञानिक विधि के पूर्ण सामाजिक क्रियान्वयन में विश्वास करता है। इसका लोकतांत्रिक प्रक्रिया, संसदीय शासन–प्रणाली, विचार एवं अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता में अटूट विश्वास है, जो आर्थिक, राजनैतिक तथा सांस्कृतिक जीवन के सभी पक्षों को समाहित करता है। मानववादी नैतिकता में विचारों और क्रियाओं का अंतिम मानवीय हितों का संरक्षण है।

मुख्य शब्द

मानववाद, प्रकृतिवाद, लोकतंत्र, लौकिक, नैतिकता.

लामोन्ट की पुस्तक The Philosophy of Humanism का प्रथम प्रकाशन 1949 में Humanism as a Philosophy के रूप में हुआ। सोलहवीं सदी से मानववाद का व्यापक महत्व रहा है। मानववाद का दर्शन, ब्रह्मांड, मानव तथा उसकी समस्याओं के विवेचन को सर्वाधिक महत्व देता है। सोलहवीं सदी में मानववादी होने का तात्पर्य यूरोपीय पुनर्जागरण के लेखकों व चिंतकों से था। बीसवीं सदी में मानववाद का अर्थ इस प्राकृतिक विश्व में मानवता के सर्वोच्च शुभ तथा बुद्धि, विज्ञान और लोकतंत्र के प्रबल समर्थन से है। सामान्य अर्थ में मानववाद केवल पेशेवर दार्शनिकों के चिंतन की विधि मात्र नहीं है, बल्कि औसत पुरुष व स्त्री के सुखी व सार्थक जीवन जीने का माध्यम भी है। मानववाद मानव प्रकृति के विविध पक्षों की व्याख्या करती है। लामोन्ट मानते हैं कि विवेक, सत्य, शुभ और सुन्दर का निर्णय करने वाला अंतिम निर्णायक है तथा विवेक ही मानव के भावनात्मक पक्ष की पहचान करता है। मानववाद का एक प्रमुख कार्य अतार्किक व अबौद्धिक बंधनों से भावनात्मक रूप से अलग होना है।[1]

लामोन्ट की राय में मानववाद एक बहुआयामी दर्शन है। प्रथम, यह जगत के विषय में प्रकृतिवादी तत्वमीमांसा को मानता है जो समस्त प्रकार के अतिप्राकृतिक सत्ता को भ्रम कहता है। प्रकृति की सम्पूर्णता में जड़ तत्व व ऊर्जा का अस्तितव मन अथवा चेतना से स्वतंत्र है। द्वितीय, मानववाद विज्ञान के तथ्यों के आलोक में स्थापित करता है कि मानव प्रकृति का विकासात्मक उत्पाद है तथा मन व मस्तिष्क एक–दूसरे से समरूप है। शरीर तथा व्यक्तित्व अटूट सत्ता है एवं मृत्यु के बाद चेतना का कोई अस्तित्व नहीं है।

लामोन्ट का मानववाद यह मानता है कि मानव अपनी समस्याओं के समाधान में स्वयं सक्षम है। यह सक्षमता विवेक तथा वैज्ञानिक सोच को साहस तथा दूरदृष्टि के साथ सामंजस्य स्थापित करने से आती है। मानववाद का मानवता के दर्शन में अटूट विश्वास है। मानववाद सार्वभौमिक नियतिवाद, भाग्यवाद तथा प्रारब्ध का विरोध करता है। यह मानता है कि मानव अपने भाग्य का निर्माता स्वयं है तथा अपने कर्मों के लिए स्वयं उत्तरदायी है।

मानववाद की नैतिकता समस्त मानवीय मूल्यों का स्त्रोत लौकिक मानता है। नैतिकता का उद्देश्य राष्ट्र, नस्ल, धर्म के आधार पर भेदभाव किए बगैर मानवीय सुख, स्वतंत्रता तथा प्रगति की प्राप्ति करना है जिससे आर्थिक, सांस्कृतिक तथा नैतिक प्रगति का मार्ग प्रशस्त हो सके। मानववाद यह मानता है कि व्यक्ति शुभ जीवन की प्राप्ति तभी कर सकता है जब वह नेक कार्यों के द्वारा समुदाय के कल्याण के लिए कार्य करे। इसी के द्वारा व्यक्तिगत संतुष्टि तथा सतत आत्मविकास को प्राप्त किया जा सकता है।

मानववाद प्रकृति के सौन्दर्य तथा वैभव के माध्यम से कला एवं सौन्दर्य के व्यापक विकास में विश्वास करता है जिससे सौन्दर्यात्मक अनुभव व्यक्ति के जीवन में महत्वपूर्ण बदलाव ला सके। मानववाद लोकतंत्र, शांति तथा जीवन के उच्च मानदंडों पर आधारित राष्ट्रीय वैश्विक आर्थिक व्यवस्था की स्थापना की परिकल्पना करता है। मानववाद विवेक तथा वैज्ञानिक विधि के पूर्ण सामाजिक क्रियान्वयन में विश्वास करता है। इसके साथ ही, इसका लोकतांत्रिक प्रक्रिया, संसदीय शासन प्रणाली, विचार एवं अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता तथा नागरिक स्वतंत्रता में अटूट विश्वास है, जो आर्थिक, राजनैतिक तथा सांस्कृतिक जीवन के सभी पक्षों को समाहित करता है।

मानववाद वैज्ञानिक विधि के आलोक में मौलिक मान्यताओं तथा असीम वाद–विवाद में दृढ़ विश्वास करता है, जिसमें एक विचारधारा के रूप में मानववाद भी शामिल है। यह एक कट्टर विचारधारा नहीं है, बल्कि एक विकासशील दर्शन है जिसमें प्रयोगात्मक परीक्षा, नवीन खोजों तथा कठिन तर्क के लिए हमेशा स्थान खुला हुआ है।

मानववाद की उपर्युक्त विशेषताएँ इसे एक संपूर्ण आधुनिक दर्शन के रूप में स्थापित करती है। इस दर्शन को विशिष्ट अर्थ में वैज्ञानिक मानववाद, धर्मनिरपेक्ष मानववाद, प्रकृतिवादी मानववाद तथा लोकतांत्रिक मानववाद के रूप में वर्गीकृत किया जा सकता है। सामान्य अर्थों में मानववाद वह विचारधारा है जो मानव के केवल एक जीवन में विश्वास करता है तथा मानव को इसे अपने रचनात्मक कार्यों से अधिक–से–अधिक बेहतर तथा खुशहाल बनाने का प्रयास करना चाहिए। मानव की खुशहाली का स्त्रोत कोई अतिप्रकृतिक सत्ता नहीं, बल्कि उसके स्वयं के कर्म हैं। स्वर्गीय ईश्वर तथा स्वर्ग जैसी किसी सत्ता का अस्तित्व नहीं है। मानव अपने विवेक तथा एक–दूसरे के साथ उदारतापूर्वक सहयोग के द्वारा इस पृथ्वी पर शांति व सौन्दर्य रूपी स्थायी सत्ता का निर्माण कर सकता है।[2]

लामोन्ट यह मानते हैं कि कोई व्यक्ति एक आदर्श समाज की स्थापना में सफल नहीं हो सका है। इसके बावजूद मानववाद मानवीय बुद्धि तथा प्रयास को उम्मीद की एकमात्र किरण मानता है और यह भी स्वीकारता है कि इसे नजरअंदाज करने के कारण ही इतिहास में अनेक मानवीय भूलें हुई है।

लामोन्ट मानते हैं कि 20वीं सदी में संकट तथा विघटन का मुख्य कारण अतिप्राकृतिक सत्ता रूपी सांत्वना रहा है जो पराजयवाद को बढ़ावा देता है और मानववाद बिना किसी समझौतवादी सोच के इस प्रवृत्ति के विरूद्ध खड़ा रहा है। मानववादी दर्शन लगातार इस बात पर बल देता है कि सांसारिक विश्व की एकमात्र घर है तथा खुशहाली तथा आत्मसंतुष्टि की प्राप्ति के लिए कोई दूसरी दुनिया नहीं है। हमें अपने भाग्य का निर्माण इसी लौकिक विश्व में करना है।

अपने नैतिक और सामाजिक पक्ष के अन्तर्गत मानववाद समस्त मानव जाति की सेवा को सर्वोच्च नैतिक आदर्श स्वीकार करता है। एक व्यक्ति के रूप मानववाद प्रभावी तरीके से इस विचार का खंडन करता है कि मानव केवल व्यक्तिगत स्वार्थ के लिए कार्य करता है। मानववाद परार्थवाद को मानव के अस्तित्व के लिए एक महत्वपूर्ण कारक मानता है।

सामान्य अर्थ में मानववाद का तात्पर्य मानव के हितों के प्रति पूर्ण समर्पण है। मानववाद व्यक्ति अथवा राष्ट्र के साथ किसी भी प्रकार के भेदभाव का विरोध करता है। यह सर्वदेशीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय मैत्री, अंर्तवैयक्तिक संवाद तथा भातृत्व का पुरजोर समर्थन करता है।

लामोन्ट ने अपने मानववाद को प्रकृतिवादी मानववाद कहा है। इसमें प्रकृति सर्वोपरि है और किसी अतिप्राकृतिक सत्ता का कोई अस्तित्व नहीं है। मानव प्रकृति का अभिन्न अंग है, यद्यपि सत्ता की विशाल संरचना अभी भी मानवीय ज्ञान की परिधि के बाहर है। सत्यता की कोई भी खोज प्राकृतिक विश्व के रहस्यों को और उद्घाटित ही करेगी।[3]

लामोन्ट ने उन प्रकृतिवादी मानववादियों का उल्लेख किया है जिनका मानववाद के विकास में महत्वपूर्ण योगदान है। इनमें विलियम जेम्स, मॉरिस कोहेन, जॉन डूबी तथा जॉर्ज सान्टायना शामिल हैं। इनके अतिरिक्त वान एम्स, डनहम, अब्राहम ऐडेल, सिडनी हुक, वुड शैलर्स, गार्डनर विलियम्स, इरविन एडमैन तथा शिंडर का भी मानववाद के विकास में महत्वपूर्ण योगदान रहा है। मानववादी वर्गीकरण के अन्तर्गत ऐल्यर बारनेस, वैन ब्रुक्स ई.एम. फॉस्टर, हेराल्ड लास्की, सार्त्र, जॉन स्लोन, नेहय सनयात सेन जेसे नाम भी शामिल रहे हैं।

मानववाद प्रकृतिवादी तथा भौतिकवादी परम्परा का अनुसरण करती है और यह स्थापित करता है कि मानववाद का सर्वोच्च नैतिक उद्देश्य मानवता के खुशहाल अस्तित्व के लिए कार्य करना है। मानववाद एक रचनात्मक दर्शन है जो मानव के सुख, सौन्दर्य तथा मूल्यों में पूरी आस्था रखता है। इस विचारधारा का समर्थन सभी संस्कृति तथा देशों के द्वारा किया जाता है। मानववाद लाखों लोगों के लिए एक कार्यात्मक दर्शन है जो अपने दैनिक जीवन को बेहतर बनाने के लिए प्रयासरत है। संतति के बेहतर भविष्य के लिए मानववाद दार्शनिक तथा नैतिक सत्य के रूप में एक समावेशी कार्यक्रम उपस्थित करता है।

लामोन्ट मानते हैं कि प्रथम मानववादी प्रोटागोरस हैं जो एक महान ग्रीक दार्शनिक थे। इनकी प्रसिद्ध उक्ति है – मनुष्य सभी वस्तुओं का मानदंड है। प्रोटागोरस एक अज्ञेयवादी थे जो ईश्वर के अस्तित्व के प्रश्न पर मौन थे। प्रोटोगोरस के बाद सोफिस्ट दार्शनिकों ने भी मानववाद के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया। सुकरात ने 'अपने को जानों' तथा 'अच्छे समाज में अच्छे व्यक्ति' के रूप में मानववादी अवधारणा को पुष्ट किया।

प्रकृतिवाद यह मानता है कि मानव, पृथ्वी, ब्रह्मांड, दिक् तथा काल सभी एक महान प्रकृति का हिस्सा हैं। सम्पूर्ण अस्तित्व का सार प्रकृति के समतुल्य है और इसके बाहर नहीं है। इसकी तत्वमीमांसा में अतिप्राकृतिक, पराभौतिक तथा अशरीरी ईश्वर के लिए कोई स्थान नहीं है। प्रकृतिवाद ने वैज्ञानिक चिंतन तथा विवेक पर निर्भरता का समर्थन किया है। मानव इस पृथ्वी की एक रचना है तथा मानव के कर्म केवल इसी पृथ्वी पर उसके सुख अथवा दुख के साधन हैं। प्रथम महान प्रकृतिवादी दार्शनिक अरस्तू हैं। वह न सिर्फ तर्कशास्त्र के जनक हैं, बल्कि एक संकाय के रूप में विज्ञान के भी। अरस्तू का ईश्वर केवल वैयक्तिक नहीं है जो केवल विश्व और मानवता की चिंता करता है, बल्कि इस ब्रह्मांड में मुख्य प्रेरक शक्ति तथा गति का शाश्वत स्त्रोत है। अरस्तू के इन विचारों ने प्रकृतिवाद की पवित्रता को नुकसान पहुँचाया है, जिसने चर्च को धर्मशास्त्र में परिवर्तित करने की छूट दी थी। इसके अतिरिक्त अरस्तू के विचारों में यह भी त्रुटि थी कि उन्होंने दास–प्रथा को न्यायसंगत ठहराया तथा महिलाओं की हीनता को स्वीकार किया।[4]

मानववादी नैतिकता में विचारों और क्रियाओं का अंतिम उद्देश्य मानवीय गरिमा की रक्षा के लिए लौकिक मानवीय हितों का संरक्षण है। मानववाद का परम ध्येय सम्पूर्ण मानवता की खुशहाली है। मानव का उद्देश्य बिना किसी अमरत्व की कामना के स्वतंत्र रूप से अपने जीवन को बेहतर बनाना है। इसके अन्तर्गत जीवन व सुख की

वृद्धि करने वाले तत्वों, जिनका स्त्रोत कला, साहित्य, मैत्री तथा सामाजिक ऐक्य है, को आत्मसात किया जाता है। मानववाद प्रेम के सौन्दर्य तथा सौन्दर्य के प्रेम में विश्वास करता है। यह शाश्वत प्रकृति के शानदार वैभव को स्वीकार करता है। यह विवेक के मार्गदर्शन में खुशी के सतत स्त्रोतों की तलाश करता है। मानववाद उच्चतम नैतिक आदर्शों का पालन तथा पोषण करता है जो उत्तरदायी नागरिकता के लिए मार्गदर्शक का कार्य करता है।

पारलौकिक तथा अतीन्द्रिय नैतिकता भविष्य के जीवन के प्रति भय दिखाकर वर्तमान जीवन में व्यक्ति की स्वतंत्रता तथा सुख को हतोत्साहित करती है। इसके विपरीत मानववादी तथा प्रकृतिवादी नैतिकता सकारात्मक है। इसमें अंतरात्मा की आवाज नए और उच्चतर मूल्यों की स्थापना करती है। मानववाद द्वैतवाद के विरोधाभास की आलोचना करता है जिसमें मानव के प्राकृतिक इच्छाओं तथा आनंद को बुराई मानकर त्याग देने की वकालत की जाती है।

मानववादी नैतिकता उस पाश्चात्य परम्परा की नैतिकता के विरूद्ध है, जो सुख व इच्छा के उन्मूलन की बात करता है। भावनात्मक भौतिक आवश्यकताओं की पूर्ति एक स्वस्थ जीवन का अनिवार्य घटक है। मानवीय इच्छाओं की पूर्ति विवके द्वारा शासित सामाजिक लक्ष्यों को ध्यान में रखकर ही होनी चाहिए।

मानववाद के अनुसार कोई भी मानवीय क्रिया स्वयं में अच्छी अथवा बुरी नहीं होती। इसका निर्धारण इसके परिणाम द्वारा व्यक्ति और समाज करता है। मानववादी नैतिकता अपने मार्गदर्शक सिद्धान्तों को मानवीय अनुभव से ग्रहण करता है तथा परीक्षा भी इसी पर करता है। मानववाद स्वस्थ नैतिक आचरण तथा नैतिक आदर्शों की शिक्षा जरूर देता है, लेकिन इन्हें कठोर नहीं बनाता है।[5]

लामोन्ट का मानववाद मानव जीवन के समस्त प्रासंगिक पहलुओं पर लोकतंत्र के सर्वाधिक विस्तार पर बल देता है। लोकतंत्र की मानववादी अवधारणा स्वतंत्रता, समानता और बंधुत्व तथा संयुक्त राष्ट्र संघ के मानवाधिकारों के सार्वभौमिक घोषणा पत्र को सर्वोच्च महत्व देता है। लोकतंत्र एक विधि भी है और लक्ष्य भी। राजनीतिक जीवन के संचालन का यह सबसे विवेकपूर्ण माध्यम है। कटु सामाजिक और आर्थिक विवादों के सौहार्द्रपूर्ण समाधान के माध्यम लोकतंत्र ही है। मानव द्वारा न्याय पाने की क्षमता लोकतंत्र को संभव बनाती है तथा मानव द्वारा अन्याय के विरूद्ध प्रतिबद्धता लोकतन्त्र को अनिवार्य बनाती है। विवेक और विज्ञान की विधि मानववाद का मूल मंत्र है, तो स्वतंत्र विचार और लोकतंत्र इसका रक्त प्रवाह है। मानववाद में समस्त मानववादी बिना किसी भय के सभी प्रकार के गैर रूढ़िवादी विचारों को अभिव्यक्त करने के लिए स्वतंत्र होते हैं। एक सच्च लोकतंत्र में मतभेदों तथा मत भिन्नताओं का स्वागत होता है, जो एक रचनात्मक समाज की ताकत है। अल्पसंख्यकों के विचारों को पर्याप्त स्थान देना भी लोकतंत्र की पहचान है।

मानववाद साध्य एवं साधन के रूप में पूर्ण लोकतंत्र की अपील करता है। वस्तुतः इतिहास में लोकतंत्र का विचार का विकास मानववादी रूप में ही हुआ है। इसके लिए इसे अतिप्राकृतिक अथवा तत्वमीमांसा मान्यताओं के समर्थन की कोई आवश्यकता नहीं है जो मानव की गरिमा तथा समानता की पुर्नस्थापना कर सके। एक लक्ष्य तथा प्रक्रिया के रूप में लोकतंत्र में मानववादी विश्वास का स्त्रोत कोई अतीन्द्रिय सत्ता नहीं है, यह अपने अस्तित्व के लिए स्वावलम्बी है।

लोकतंत्र में नागरिक अधिकारों को सर्वोच्च महत्व दिया जाता है जिसके अंतर्गत विचारों की स्वतंत्रता, विधि की निहित प्रक्रिया तथा कानून का समान संरक्षण शामिल है। इसमें सभी प्रकार के नस्लीय, राष्ट्रवादी तथा जातीय भेदभावों का विरोध किया जाता है। जब किसी देश में नस्लीय अल्पसंख्यकों के साथ भेदभाव होता है तब उसे सच्चे अर्थों में लोकतंत्र नहीं कहा जा सकता। लोकतंत्र में आर्थिक लोकतंत्र का महत्वपूर्ण स्थान है। समान अवसर, सम्मानजनक वेतन तथा आर्थिक सुरक्षा सभी व्यस्क का अधिकार है। एक पूर्ण आर्थिक लोकतंत्र में उच्च मानक का जीवन सभी नागरिकों के लिए महत्वपूर्ण शर्त है। रंग, जाति, धर्म तथा लिंग के आधार पर आजीविका अथवा मजदूरी में भेदभाव आर्थिक लोकतंत्र के मूलभूत सिद्धान्तों के विरूद्ध है। सामाजिक लोकतंत्र की मानववादी अवधारणा में सभी लोगों के प्रति परस्पर भ्रातृत्व तथा परोपकार की भावना शामिल है। लोकतंत्र में विभाजनकारी तत्वों का कोई स्थान

नहीं है। इसमें सभी नागरिकों को किसी भी धर्म अथवा दर्शन को अपनाने की आजादी रहती है।

मानववादी नैतिक मूल्यों को मानवीय अनुभव से निःसृत मानता है। नैतिकता स्वायत्त और परिस्थितिजन्य होती है जिसे किसी धर्मशास्त्रीय अथवा आदर्शवादी मान्यताओं की आवश्यकता नहीं है। नैतिकता मानवीय आवश्यकताओं और अभिरूचियों की उपज है। मानव जीवन का अर्थ इस सन्दर्भ में है कि हम अपने भविष्य का निर्माण और विकास करते हैं। खुशहाली मानवीय इच्छाओं की रचनात्मक चेतना, जिसकी अभिव्यक्ति व्यक्तिगत और सामूहिक आनंद के क्षणों में होती है, मानववाद के सतत विषय वस्तु हैं। मानव इसी जीवन में एक अच्छे जीवन की कामना करता है। विघटनकारी तत्वों, व्यवसायीकरण तथा अमानवीकरण जैसी दुर्बल करने वाली शक्तियों के बावजूद एक समृद्ध जीवन को पाने का प्रयास करना मानववाद का ध्येय है।[6]

निष्कर्ष

कॉलिस लामोन्ट ने मानववाद का प्रबल समर्थन किया है। उनके अनुसार मानववाद इस प्राकृतिक विश्व में समस्त मानवता के अधिकार शुभ के लिए सहर्ष सेवा का दर्शन है। यह बुद्धि, विज्ञान और लोकतंत्र की विधि का समर्थन करता है। मानववाद के अनुसार मानव में इतनी क्षमता है कि वह साहस और दूरदृष्टि के साथ बुद्धि और वैज्ञानिक विधि की सहायता से अपनी समस्याओं को सुलझा सकता है। लामोन्ट ने अपने मानववाद के अन्तर्गत लोकतंत्र को अधिक महत्व दिया है। लामोन्ट के अनुसार मानव जीवन के सभी प्रासंगिक क्षेत्रों में लोकतंत्र का व्यापक विस्तार मानववादी सिद्धान्त की एक आवश्यक मांग है।

सन्दर्भ सूची

1. लामोन्ट कॉर्लिस, (1997) *दि फिलोसफि ऑफ ह्यूमेनिज्म,* ह्यूमैनिस्ट प्रेस, एसमहर्स्ट न्यूयॉर्क, पृ. 12–15।
2. वही, पृ. 64–67।
3. वही, पृ. 227, 285।
4. वही, पृ. 267–73।
5. लामोन्ट, कॉर्लिस (1956) *फ्रीडम इज एज फ्रीडम डज,* होरिर्जान प्रेस, न्यूयॉर्क, पृ. 117।
6. लामोन्ट, कॉर्लिस (1951) *दि इंडीपेंडेंट माइन्ड,* होरिर्जान प्रेस, न्यूयॉर्क, पृ. 77–78।

——==00==——